उच्च माध्यमिक स्तर पर संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम की उपादेयता का विश्लेषणात्मक अध्ययन

अनुभव बिशु*

सारांश

शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य का सर्वांगीण विकास यानि शारीरिक मानसिक और आत्मिक विकास करना है। आज का विद्यार्थी कल का नागरिक है। एक सद्नागरिक के लिए जिन गुणों की आवश्यकता है उन गुणों का प्रथम चरण विद्यार्थी जीवन ही है। विद्यार्थी जीवन वह अवस्था है जिसमें बालक अनेक गुणों का तथा जीवन मूल्यों का संचय करता है, ज्ञानार्जन करता है और मस्तिश्क का परिश्कार करता है। अतः शिक्षार्थी के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है कि विद्यालय में किताबी ज्ञान के साथ–साथ विभिन्न पाठ्य–सहगामी क्रियाएं व सह–अभिवृत्तियां जैसे– खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, विज्ञान एवं अन्य विषयों से संबंधित कार्यक्रम, एन. सी. सी., एन. एस. एस. एवं स्काउटिंग इत्यादि का होना आवश्यक है जिनसे विद्यार्थियों में नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों का विकास हो सके। यहां 100 छात्र–छात्राओं के मत माध्यमिक स्तर पर संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम की उपादेयता जानने के लिए प्रयुक्त किये हैं, जिसमें माध्यमिक स्तर पर संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना (N.S.S) की उपादेयता को सार्थक पाया है।

मुख्य शब्द : राष्ट्रीय सेवा योजना, उच्च माध्यमिक स्तर, पाठ्यसहगामी गतिविधि

प्रस्तावना

शिक्षा समाज का आधार है, जो मानव को मुक्ति का मार्ग दिखलाती है। शिक्षा के द्वारा शिक्षा ही हमारी समस्याओ को सुलझाती है और हमारे जीवन को सुसंस्कृत बनाती है। शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली सतत प्रक्रिया है जो बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास कर उसे पूर्णता प्रदान करती है। जिस प्रकार शिक्षा एक ओर बालक का सर्वागीण विकास करके उसे तेजस्वी, बुद्धिमान, चरित्रवान, विद्वान तथा वीर बनाती है, उसी प्रकार दूसरी ओर शिक्षा समाज की उन्नति के लिए भी शक्तिशाली एवं आवश्यक साधन है। आधुनिक युग मे छात्रों के सर्वागीण विकास के लिए विद्यालयों में पाठ्यक्रम के साथ–साथ अन्य पाठय सहगामी क्रियाओ तथा कार्यानुभवों को शामिल करके पाठ्यक्रम को लचीला तथा प्रगतिशील बनाने पर बल दिया जाता है, जिससे प्रत्येक बालक अपनी अपनी रूचियों तथा क्षमताओं के अनुसार विकसित होकर समाज एवं राष्ट्र की यथासंभव सेवा करने में सक्षम हो सके। इस प्रकार वर्तमान में विद्यालयी पाठ्यक्रम के साथ साथ अनेक पाठ्य सहगामी क्रियाओं का संचालन किया जाता है, जिनमें स्काउटिंग, राष्ट्रीय कैडेट कौर (एन.सी.सी.) राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.) जैसी गतिविधियाँ महत्वपूर्व है। एन.एस.एस. जैसी पाठ्यसहगामी गतिविधियों के संचालन से छात्रों मे सृजनात्मकता तथा रचनात्मकता का विकास किया जाता है तथा शारिरिक श्रम के प्रति रूचि जागृत कर इनमे सामाजिकता के गुणों का विकास किया जाता है ताकि समाज के सेवा के लिए सदैव तैयार व सजग रहे। इस प्रकार देश के विभिन्न विद्यालयो में 10+2 स्तर पर संचालित एन.एस.एस. कार्यक्रम की उपादेयता अथवा इसकी सफलता असफलता का अध्ययन तथा मूल्यांकन करना अत्यन्त आवश्यक है। शोधकर्ता ने हनुमानगढ़ में एन.एस.एस. संचालित होने वाले विद्यालयों में इसकी उपादेयता का अध्ययन किया है।

राष्ट्रीय सेवा योजना का परिचय

डी. एस. कोठारी की अध्यक्षता वाले शिक्षा आयोग (1964–66) में सुझाव दिया कि छात्रों को सामाजिक सेवा मे शिक्षा के हर स्तर पर शामिल होना चाहिए। अगस्त 1967 मे शिक्षामंत्रियो के सम्मेलन में एन.सी.सी. के विकल्प के रूप मे राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.) का प्रस्ताव रखा गया। मई 1969 में शिक्षा मंत्रालय और यू.जी.सी. द्वारा विश्वविद्यालयो तथा उच्च शिक्षण सस्थाओ के प्रतिनिधि के रूप मे छात्रो का सम्मेलन बुलाया जिसमे घोषणा की गई कि ''राष्ट्रीय सेवा योजना

*शोध अध्येता, टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर एवं व्याख्याता, श्री गुरु नानक खालसा शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, हनुमानगढ़ (राज.)

राष्ट्रीय एकता का शक्तिशाली साधन हो सकता है। 1985 में प्रयोगात्मक आधार पर +2 स्तर पर एन.एस. एस. कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, गोवा, गुजरात, पं. बगाल तथा केन्द्रीय प्रदेश दमन व दीव में शुरू की गई। 1992 मे इसका गुजरात, केरल, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, पं.बगाल, तमिलनाडु, गोवा, चण्डीगढ, दिल्ली, पाण्डीचेरी तक विस्तार हो गया। इसमे 1.60 लाख छात्र शामिल हुए। यह संख्या 13 लाख से भी अधिक हो गई। नई शिक्षा नीति 1986 में तय किया गया कि युवाओं को शैक्षणिक संस्थाओ और बाहरी अभिकरणों द्वारा राष्ट्रीय और सामाजिक विकास मे स्वयं को शामिल करने का अवसर प्रदान किया जायेगा छात्रो के लिए एन.एस.एस. या एन.सी.सी. मे भाग लेना आवश्यक किया गया। अध्यापकों और युवाओं की सक्रिय भागीदारी एवं प्रोत्साहन लिए निम्न बातें एन.एस. एस. में शामिल की गई– (क) एन.एस.एस. में अध्यापको का योगदान पहचानना। (ख) एन.एस.एस. के अन्तर्गत विशेष योगदान के लिए अध्यापकों को प्रोत्साहन देना। (ग) एन.एस.एस. के अन्तर्गत विशेष रिकॉर्ड वाले छात्रो का विशेष प्रोत्साहन और उच्च शिक्षा में प्रवेश के समय और पद्धोन्नति के लिए रियायत देना।

राष्ट्रीय सेवा योजना के उद्देश्य

राष्ट्रीय सेवा योजना ;छ्ष्ष्ध्द के उद्देश्य निम्न लिखित है– (1) छात्र जिस समाज में काम करते है, उसे समझ सके, (2) अपने आपको सम्बधित समाज के सन्दर्भ मे समझने मे समर्थ हो सके। (3) आपात काल और दैवीय आपदाओं का सामना करने की क्षमता का विकास कर सके। (4) अपनी शिक्षा का उपयोग वे व्यक्ति तथा समाज की कठिनाईयों के व्यावहारिक हल कर सकें और अपने में सामाजिक औार नागरिक दायित्व बोध की भावना का विकास कर सके। (5) समूह मे सहने और दायित्वों मे सहभागी बनने के लिए जिस क्षमता की आवश्यकता है, उसका अपने में विकास कर सके। (6) राष्ट्रीय एकता को क्रियात्मकता दे सके और समाज की सहभागिता को गतिमान करने मे निपुणता प्राप्त कर सके।

समस्या कथन

इस अध्ययन में शोध समस्या को अग्रांकित रुप में समझा गया है– ''माध्यमिक स्तर पर संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम की उपादेयता का विश्लेषणात्मक अध्ययन।''

शोध के उद्देश्य

शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उदेश्य निर्धारित किये हैं–

1. माध्यमिक स्तर पर संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना (N.S.S) कार्यक्रम की उपादेयता का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।
2. छात्रों मे नागरिक दायित्व एवं राष्ट्रीय मूल्यों के विकास में एन.एन.एस. की उपादेयता का अध्ययन करना।
3. छात्रों में समाज सेवा एवं सामाजिक मूल्यों के विकास में एन.एस.एस. की उपादेयता का अध्ययन करना।
4. छात्रों तथा छात्राओं में एन.एन.एस. के प्रति जागरूकता एवं अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. सरकारी तथा अर्द्ध सरकारी विद्यालयों के छात्र–छात्राओं में एन.एन.एस. के प्रति जागरूकता एवं अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. एन.एन.एस. की उपादेयता के सन्दर्भ में कार्यक्रम अधिकारियों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएं

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता ने शून्य परिकल्पना का निर्माण किया है, जो निम्नलिखित हैं–

1. एन.एस.एस. की नागरिक दायित्व एवं राष्ट्रीय मूल्यों के विकास में कोई सार्थक उपादेयता नहीं है।
2. एन.एस.एस. की समाज सेवा तथा सामाजिक मूल्यों के विकास में कोई सार्थक उपादेयता नहीं है।
3. छात्रों तथा छात्राओं में एन.एस.एस. के प्रति जागरूकता एवं अभिरूचि में अन्तर नहीं पाया जाता है।
4. सरकारी एवं अर्द्ध सरकारी विद्यालयों के छात्र छात्राओ में एन.एस.एस. के प्रति जागरूकता व अभिरूचि में अन्तर नहीं पाया जाता है।
5. सरकारी एवं अर्द्ध सरकारी विद्यालयो के छात्रों में एन.एस.एस. के प्रति जागरूकता व अभिरूचि में अन्तर नहीं पाया जाता है।
6. सरकारी एवं अर्द्ध सरकारी विद्यालयो की छात्राओं में एन.एस.एस. के प्रति जागरूकता व अभिरूचि में अन्तर नहीं पाया जाता है।
7. एन.एस.एस. कार्यक्रम की उपादेयता के प्रति कार्यक्रम अधिकारियों में नकारात्मक दृष्टिकोण पाया जाता है।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व

वर्तमान में जहां राष्ट्र के युवाओं में नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, एवं चारित्रिक मूल्यों का अवमूल्यन हो रहा है, ऐसे वातावरण में राष्ट्रीय सेवा योजना जैसी गतिविधि विद्यालय स्तर पर छात्रों में नैतिकता एवं सामाजिकता के गुणो का विकास करने मे कितनी सफल या असफल है। शिक्षा के द्वारा समाज भावी पीढ़ी के बालकों को उच्च आदर्शो, आशाओं, आकांक्षाओं, विश्वासों तथा परम्पराओं आदि सांस्कृतिक विरासत को इस प्रकार हस्तान्तरित करता है, कि उनके हृदय में राष्ट्रीय सेवा और प्रेम की भावना प्रज्जवलित हो सके। जब ऐसी भावना और आदर्श वाले बालक तैयार होकर समाज तथा अपने जीवन में अनुकरणीय कार्य करेगे तो समाज निरन्तर उन्नति के शिखर पर चढेगा। इस प्रकार व्यक्ति और समाज दोनों के लिए शिक्षा एक महत्ती आवश्यकता है। हमारी वर्तमान शिक्षा में केवल पाठयक्रम पर अत्यधिक बल दिया जा रहा है, इससे बालक अच्छे प्राप्तांक तो हासिल कर लेता है लेकिन उसमें सामाजिकता तथा नागरिकता के गुण विकसित नही हो पाते हैं। समाज की समस्याओं के बारे में वह अनजान बना रहता है, जिससे उसका शारिरिक विकास एवं सामाजिक समायोजन असंतुलित हो जाता है। छात्रों का सर्वागीण विकास करने के लिए उन्हे पाठ्यक्रम के साथ साथ पाठ्य सहगामी कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रेरित करना भी आवश्यक है। क्या यह योजना अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने मे सफल है ?क्या यह छात्रों के लिए लाभदायक है ?क्या ये छात्रों के सर्वागीण विकास में सहायक है ? क्या इसका विस्तार करना आवश्यक है ?क्या एन.एस.एस. सार्थक है ? इत्यादि समस्त प्रश्नों का उत्तर खोजने के लिए शोधकर्ता ने एन.एस.एस. विषय पर विश्लेषणात्मक अध्ययन की आवश्यकता महसूस की और राजस्थान राज्य के हनुमानगढ़ शहर के एन.एस.एस. संचालित होने वाले उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों को अध्ययन के लिए चुना गया।

शोध अध्ययन की परिसीमाएं

शोधकर्ता ने अपने शोध कार्य की निम्नलिखित परिसीमाएं निर्धारित की–

1. प्रस्तुत शोध के अन्तगर्त केवल हनुमानगढ़ शहर में एन.एस.एस. संचालित होने वाले विद्यालयों को ही चुना गया।
2. स्वयंसेवकों में 50 छात्रों तथा 50 छात्राओं के मत को सम्पूर्ण स्वंयसेवकों (छात्र व छात्राओं) का मत लिया गया ।
3. कार्यक्रम अधिकारियो में 4 पुरूषों तथा 4 महिलाओं के मत को ही सम्पूर्ण कार्यक्रम अधिकारियों का मत लिया गया।

शोध के प्रमुख निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने शोधकर्ता द्वारा निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किये हैं–

1. माध्यमिक स्तर पर संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना (N.S.S) की उपादेयता सार्थक पायी गयी। समाज सेवा तथा सामाजिक मूल्यों के विकास में एन.एस. एस की उपादेयता 75.5 प्रतिशत पाई जबकि 24.5 प्रतिशत ने इसे अस्वीकार किया।
2. नागरिक दायित्व तथा राष्ट्रीय मूल्यों के विकास में एन.एस.एस. की उपादेयता 70.33 प्रतिशत पाई गई।
3. छात्रों में समाज सेवा एवं सामाजिक मूल्यों के विकास में एन.एस.एस. की उपादेयता सार्थक है। एन.एस.एस. के प्रति जागरूकता व अभिरूचि छात्रों की तुलना में छात्राओं में 5 प्रतिशत अधिक पाई गई।
4. छात्राओं में छात्रों की तुलना में एन.एस.एस के प्रति जागरूकता एवं अभिरूचि अधिक पाई जाती है।
5. सरकारी विद्यालय के छात्रों की तुलना में अर्द्ध सरकारी विद्यालय के छात्रों में एन.एस.एस के प्रति जागरूकता एवं अभिरूचि 4.67 प्रतिशत अधिक पाई गई।
6. सरकारी विद्यालयों की छात्राओ की तुलना में अर्द्ध सरकारी विद्यालयों की छात्राओं में एन.एस.एस के प्रति जागरूकता 25 प्रतिशत अधिक पाई गई।
7. छात्रों में नागरिक दायित्व एव राष्ट्रीय मूल्यों के विकास में एन.एस.एस. की उपादेयता सार्थक है।
8. सरकारी विद्यालयों की तुलना में अर्द्ध सरकारी विद्यालयों के छात्र छात्राओं में एन.एस.एस के प्रति जागरूकता एंव अभिरूचि अधिक पाई जाती है।
9. सरकारी विद्यालयों की तुलना में अर्द्धसरकारी विद्यालय के छात्रों में एन.एस.एस के प्रति जागरूकता एवं अभिरूचि अधिक पाई जाती है।
10. सरकारी विद्यालयों की तुलना में अर्द्धसरकारी विद्यालयों की छात्राओं में एन.एस.एस के प्रति जागरूकता एवं अभिरूचि अधिक पाई जाती है।

11. कार्यक्रम अधिकारियों ने एन.एस.एस. की उपादेयता 78.67 प्रतिशत स्वीकार की। अतः कार्यक्रम अधिकारियों के अनुसार एन.एस.एस कार्यक्रम की उपादेयता सार्थक पाई गई।

शोध अध्ययन की उपादेयता

प्रस्तुत शोध अध्ययन राष्ट्रीय सेवा योजना (N.S.S) के प्रति विद्यार्थियों की रूचि में सकारात्मक प्रभाव डालकर उन्हे सामाजिक तथा नागरिक कर्त्तव्यों की ओर उन्मुख करने में सहायक साबित होगा। विद्यार्थी एन.एस.एस की उपादेयता समझ सकेंगे। इस शोध अध्ययन के बाद शिक्षक वर्ग छात्रों में सामाजिक तथा नागरिक दायित्वों का विकास तथा सामाजिक व राष्ट्रीय मूल्यों का विकास करने के लिए उन्हे एन.एस.एस कार्यक्रम से जुड़ने की प्रेरणा दे सकता है। शिक्षक वर्ग एन.एस.एस की उपादेयता को समझकर छात्रों को समाज सेवा कार्यो को करने के लिए प्रेरित कर सकता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन उन विद्यालयों के लिए लाभकारी एवं उपयोगी साबित हो सकता है, जहां एन.एस.एस कार्यक्रम का असंतुलित संचालन हो रहा है। प्रस्तुत शोध से समाज के लोगों को यह पता चलेगा कि एन.एस.एस कार्यक्रम छात्रों में समाज सेवा तथा राष्ट्रीय मूल्य विकसित करने में उपयोगी है। इससे कार्यक्रम में सामाजिक सहभागिता बढ़ेगी। सरकारी विद्यालय में कम तथा अर्द्धसरकारी विद्यालय में अधिक छात्रों की बजाय छात्राओं में अधिक जागरूकता व अभिरूचि के कारणों को खोजकर इसमें सुधार कर सकेगे।

भावी शोध के लिए सुझाव

किसी भी विषय पर किया गया शोधकार्य सम्पूर्ण या अंतिम नही हो सकता है। एक ही विषय के विभिन्न पक्षों पर भविष्य में भी शोधकार्य होते रहते है। राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.) भी एक व्यापक स्तरीय कार्यक्रम है। प्रस्तुत शोध में केवल माध्यमिक स्तर पर संचालित एन.एस.एस कार्यक्रम की उपादेयता का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। एन.एस.एस कार्यक्रम समस्त उच्च माध्यमिक विद्यालयों में संचालित नही होने के कारण न्यादर्श का आकार छोटा होना भी प्रस्तुत शोध की एक सीमा मानी जा सकती है। प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता ने न्यादर्श के रूप में केवल हनुमानगढ़ के एन.एस.एस. संचालित होने वाले कुल 5 विद्यालयों के 100 छात्र छात्राओं तथा 8 कार्यक्रम अधिकारियों को चुना, लेकिन न्यादर्श में शहरी क्षेत्र के साथ ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों के छात्रों को भी शामिल किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता में एन.एस.एस. की उपादेयता का अध्ययन करने के लिए केवल हनुमानगढ़ के विद्यालयों को ही चुन कर अपना लघुशोध कार्य पूर्ण किया, लेकिन शोधकार्य को हनुमानगढ़ शहर के साथ साथ जिले के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों तक विस्तारित किया जा सकता है।

संदर्भ

किरनपाल, प्रेम (1981). वैल्यूज इन एजूकेशन. नई दिल्लीः एन सी ई आर टी.

गुप्ता, नत्थूलाल (2005). मूल्यपरक शिक्षा और समाज. नई दिल्लीः नमन प्रकाशन.

गजविनी, मरियम जावेद (1996). कल्चर एंड एकेडमिक अचीवमेंटः वैल्यू प्लेस्ड ऑन एजुकेशन बाई द फैमिली एंड एकेडमिक सक्सेस. डैज़रटेशन अब्स्ट्रैक्ट इंटरनेशनल 1997, 58(5): 1516.

वर्मा, मधुलिका व यादव, दीपमाला (2012). कक्षा दसवीं स्तर पर मूल्य विवचेना प्रतिमान की प्रभाविकता का सामाजिक मूल्य एवं प्रतिक्रियाओं के संदर्भ में अध्ययन. भारतीय आधुनिक शिक्षा. वर्ष 33, अंक 1, जुलाई 2012.

गुप्त, एन. (1987). मूल्य परक शिक्षा, अजमेर, राजस्थानः कृष्णा ब्रदर्स.

जैन, धर्मपाल, (2004). मूल्य आधारित शिक्षा, भारतीय आधुनिक शिक्षा, वर्ष–23, अंक–1, जुलाई 2004,पृ.सं. 20–23.